संपादकीय

वार्षिक पत्रिका "प्रवाहिनी" का 19वाँ अंक आप तक पहुँचाने में हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अपेक्षित बढ़ोतरी हो, इसी उद्देश्य से यह पत्रिका आप सभी के सहयोग से पिछले 19 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित की जा रही है। विद्वत लेखकों तथा सुधी पाठकों के स्नेह की प्रतीक इस पत्रिका में इस बार भी भिन्न–भिन्न विषयों से जुड़े प्रासंगिक एवं जनोपयोगी लेखों को शामिल किया गया है।

हम उन समस्त लेखकों के आभारी हैं जिन्होंने अपने रोचक तथा उपयोगी लेख देकर राजभाषा हिन्दी का गौरव बढ़ाया है और हमें इस मुकाम तक पहुँचाने में सहयोग प्रदान किया है। हर स्तर के पाठकों को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास किया गया है कि लेखों की भाषा सरल और सहज हो ताकि हर पाठक को ये रुचिकर व उपयोगी लगें।

मनुष्य से गल्तियाँ होना स्वाभाविक है अतः इस पत्रिका में जो भी त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिए हम क्षमा चाहते हैं। यह पत्रिका आपको कैसी लगी, अवश्य लिखें तथा इसकी साज–सज्जा व सामग्री इत्यादि में सुधार हेतु अपने सुझावों से भी अवगत कराएं।

(संपादक मंडल)